BHDLA 135

हिंदी भाषा : विविध प्रयोग

दिसंबर 2024 की परीक्षा में आने वाले महत्वपूर्ण प्रश्न उत्तर सहित ।

आसान भाषा में समझें.

PART-1

किसी भाषा के लिए लिपि के महत्व पर उदाहरण के साथ अपने विचार व्यक्त कीजिए ।

लिपि किसी भी भाषा का अभिन्न हिस्सा होती है और उसकी सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और सामाजिक पहचान को संरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। लिपि न केवल भाषा के शब्दों को लिखने का माध्यम है, बल्कि यह उस समाज और संस्कृति की पहचान भी होती है जिससे वह जुड़ी होती है.

लिपि के ज़रिए ही हम अपने विचारों और भावों को सुरक्षित रख सकते हैं.

लिपि के कारण ही हम भाषा संबंधी चिंतन कर पाते हैं.

लिपि के कारण ही हम भाषा की साहित्यिक और सांस्कृतिक संपदा को संरक्षित कर पाते हैं.

लिपि के कारण ही हम भाषा को समृद्ध कर पाते हैं.

लिपि के कारण ही हम भाषा के मानक रूप का संरक्षण कर पाते हैं.

लिपि के कारण ही हम भाषा के शब्दों को उनके मूल रूप में बनाए रख पाते हैं.

लिपि के कारण ही हम भाषा को अंकित रूप में भी इस्तेमाल कर पाते हैं.

लिपि के कारण ही हम भाषा को दिक् और काल की सीमाओं से परे ले जा सकते हैं.

लिपि के कारण ही हम उन लुप्तप्राय सभ्यताओं के बारे में जानकारी हासिल कर पाते हैं, जिन्होंने अपने बारे में लिखा था.

Scholarly Minds

उदाहरण के रूप में, हिंदी भाषा को लें। हिंदी की लिपि देवनागरी है, जो न केवल भारतीय संस्कृति के प्रतीक के रूप में देखी जाती है, बल्कि यह भारतीय सभ्यता और ज्ञान की परंपरा से भी जुड़ी हुई है। जब हम हिंदी के ग्रंथों जैसे रामायण, महाभारत, वेद, और उपनिषदों को पढ़ते हैं, तो यह लिपि हमें उस समय की सोच, दर्शन और समाज की संरचना को समझने का अवसर प्रदान करती है.

वर्तनी संबंधी नियमों का उदाहरण सहित वर्णन कीजिए।

वर्तनी के नियम

1. वर्तनी में परसर्ग / कारक चिन्ह का प्रयोग

परसर्ग, संज्ञा से अलग लिखा जाता है, सर्वनाम के साथ जुड़ा रहता है. किन्तु लगातार दो परसर्ग रहे तो पहला सर्वनाम से जुड़ा रहेगा और दूसरा उससे अलग.

उदाहरण-

मै ने गलती नही की थी.

मैंने गलती नहीं की थी.

2. वर्तनी में हलन्त का प्रयोग

मान् /वान् /हान् प्रत्ययान्त शब्दो में हलन्त का प्रयोग अवश्य होना चाहिए.

जैसे- श्रीमान् ,आयुष्मान् , महान्

त्/अम्/उत् प्रत्ययान्त तत्सम शब्दों में हलन्त का प्रयोग किया जाता है.

जैसे- विद्या , शुद्ध

Scholarly Minds

3. योजक चिन्ह का प्रयोग

दो शब्दों में परस्पर संबंध स्पष्ट करने के लिए तथा उन्हें जोड़कर लिखने के लिए योजक-चिह्न (–) का प्रयोग किया जाता है.

तत्पुरुष और द्वंद समास दोनों पदों के बीच में : गीता- संगीता, माता-पिता , खरा-खोटा.

मध्य के अर्थ में : कालका-हावड़ा-मेल .

तुलना सूचक सा/सी/से के पहले : तुम-सा, मीरा-सी भक्त .

विभिन्न शब्द (युग्मों में)-भीड़ – भाड़ , डर-वर , पानी – वानी

4. वर्तनी में रेफ चिन्ह का प्रयोग

रेफ़ “र् ” का ही रूप है. जिस वर्ण के बाद “र् ” का झटके से उच्चारण हो, ठीक उस वर्ण के बदले वर्ण पर “र् ” का प्रयोग किया जाता है.

जैसे- गर्म , मर्म , वर्ष , शर्म

5. वाला / वाली / वाले/ कर आदि प्रत्ययो का प्रयोग

वाला/ वाली/वाले का प्रयोग विशेषण बनाने के लिए और कर का प्रयोग पूर्व कालीन क्रिया या क्रिया विशेषण बनाने के लिए होता है.

जैसे- दूधवाला , चायवाला , सोकर ,बैठकर

6. ” कि ” का प्रयोग दो शब्दो को जोड़ने के लिए , दो पदो के बीच संबंध दर्शाने और ” करना ” क्रिया के भूतकालिक रूप में प्रयोग किया जाता है.

जैसे – मोहन की गाय

बेलों की कथा

महाराणा प्रताप ने लड़ाई नहीं की .

Scholarly Minds

7. ढ एवम ढ़ का प्रयोग

" ढ़ " का प्रयोग किसी शब्द के मध्य या अन्त भाग में किया जाता है. जबकि " ढ " का प्रयोग शब्द के शुरू में किया जाता है.

जैसे- गढ़ना , पढ़ना , ढलना आदि.

8. " श " , " ष " और " स " का प्रयोग

• यदि अ/आ से भिन्न स्वर रहे तो " ष " का प्रयोग किया जाता है जैसे_ विषम, आकर्षित, धनुष, पुरुष, आभूषण

" ट " वर्ग के पहले " ष " का प्रयोग होता है

जैसे_ विशिष्ट ,शिष्ट ,कष्ट, भ्रष्ट ,नष्ट

• वर्तनी में ऋ के बाद " ष " का प्रयोग होता है.

जैसे_ कृषि ,वृष्टि ,ऋषि

• आगे " च " वर्ग रहने पर " श " का प्रयोग होता है.

जैसे_ निश्छल

• " श " और " ष " दोनो का एक साथ प्रयोग हो तो पहले " श " का फिर " ष " का प्रयोग होता है.

जैसे- विशेष , शोषण , शीर्षक , विशेषण

• वर्तनी में आगे " त " वर्ग रहने पर " स " का प्रयोग होता है.

जैसे – विस्तार , निस्तार

Scholarly Minds

9. अनुस्वार और चन्द्रबिन्दु का प्रयोग

अनुस्वार के उच्चारण में 'अं' की ध्वनि मुख से निकलती है. हिंदी में लिखते समय इसका प्रयोग शिरोरेखा के ऊपर बिंदु लगाकर किया जाता है. इसका प्रयोग 'अ' जैसे किसी स्वर की सहायता से ही संभव हो सकता है; जैसे – संभव.

इसका वर्ण-विच्छेद करने पर 'स् + अं(अ + म्) + भ् + अ + व् + अ' वर्ण मिलते हैं. इस शब्द में अनुस्वार 'अं' का उच्चारण (अ + म्) जैसा हुआ है, पर अलग-अलग शब्दों में इसका रूप बदल जाता है; जैसे

संचरण = स् + अं(अ + न्) + च् + अ + र् + अ + ण् + अ

संभव = स् + अं(अ + म्) + भ् + अ + व् + अ .

संघर्ष = स् + अं(अ + ङ्) + घ् + अ + र् + ष् + अ

संचयन = स् + अं(अ + न्) + च् + अ + य् + अ + न् + अ

चंद्रबिन्दु एक विशेषक चिह्न है जो देवनागरी, गुजराती, बांग्ला, ओडिया, तेलुगु तथा जावा की लिपि आदि में प्रयुक्त होता है. इसका आकार चन्द्रमा जैसा होने से इसे 'चन्द्रबिन्दु' कहा जाता है. यह अनुनासिक को व्यक्त करता है. उदाहरण : चाँद (देवनागरी), দাঁত (बांग्ला).

10. वर्तनी में "इ " और " ई " का प्रयोग

किसी स्त्रीलिंग संज्ञा शब्द के अंत में " ई " रहने पर उसके बहुवचन रूप बनाने में " ई " की जगह "इ " की मात्रा का प्रयोग होता है जैसे_

नदी = नादिया

गाड़ी = गाडियां

11. वर्तनी में " उ" और " ऊ" का प्रयोग

ऊकारान्त स्त्रीलिंग सैया के बहुवचन रूप बनाने में "ऊ " कि जगह " उ " की मात्रा लगाई जाती है.

जैसे –

वधू = वधूएं

Scholarly Minds

बहू = बहूएं

Scholarly Minds